# चतुर्थ अध्याय

पाश्चात्य साहित्य के यथार्थवाद का हिन्दी भाषा पर प्रभाव एवं हिन्दी के प्रमुख यथार्थवादी लेखक

5- पाश्चात्य साहित्य के यात्रावृत्त का हिन्दी यात्रा पर प्रभाव एवं हिन्दी के प्रमुख यात्रा - वृत्त लेखक :-

राहुल जी आधुनिक भारत के कवि केन्द्र थे। इन्होंनें फाह्यान, अलबरूनी, मार्कोपोली, बर्नियर, रेविनायर आदि महान यात्रियों की परम्परा को पुनर्जीवित किया हैं। कोलम्बस और स्काउट के यात्रियों से इनकी ' तिब्बत यात्रा ' का कम महत्व नहीं है । इन्होंने कई देशों की अनेक बार यात्राएं की हैं। अकेले नेपाल की सात से अधिक बार यात्रा कर चुके थे।

स्वदेश यात्राओं में सिक्किम, भूटान से लेकर कश्मीर तक हजारों मील में फैले हिमालय के इस आचंल विशेष की इन्होंने कई बार यात्राएं कीं, तथा इस रमणीय एवं भू-भाग की तीन सहस्त्र से भी अधिक पृष्ठों में ( पॉच खण्डों )विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। श्रेष्ठता एवं पूर्णता की दृष्टि से इस भाग पर हिन्दी के कुल लेखकों नें मिलकर इतना नहीं लिखा होगा। जितना अकेले राहुल जी ने लिखा हैं। इसके अतिरिक्त भारत के प्रत्येक ऐतिहासिक महत्व के स्थानों पर इन्होंने पर्याप्त मात्रा में लिखा है।

विश्व यात्रियों में तिब्बत, अफगानिस्तान, ईरान, रूस तथा चीन आदि देशों पर लिखे इनके यात्रा विवरण अन्य लेखकों की अपेक्षा अधिक सम्पूर्ण एवं महत्वपूर्ण हैं। जापान तथा यूरोप आदि पर सभी दृष्टियों से इनसे अच्छा अन्य लेखकों ने लिखा है। प्रत्येक देश का तुलनात्मक विश्लेषण यहॉ प्रस्तुत किया जाता है। उन स्थलों के बारे में क्रमशः अध्ययन किया गया है। विभिन्न देशों का भ्रमण करने के पश्चात हिन्दी साहित्यकारों ने जो यात्रा वृत्तान्त लिखे हैं, उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:-

1- लंका :- महान घुमक्कड़ राहुल सॉकृत्यायन की कुछ यात्राएं साहसिक और ऐतिहासिक महत्व की नहीं हैं। ऐसी कुछ यात्राओं का विस्तृत वर्णन उन्होंने स्वतंत्र पुस्तकों में किया है। आर्य समाज के प्रचारक स्वामी रामकेदार ने गेरूआ लुंगी और चादर में सन् **1926** ई. में खैबर दर्रे से लेकर लेह व लद्दाख तक के हिमालय की यात्रा की। जिसका विवरण ' मेरी लद्दाख यात्रा ' में उन्नीस मास रहकर अध्ययन-अध्यापन करते हुए रामोदार साधु ने वहॉ के ऐतिहासिक स्थलों के बारे में जो यात्रा-वर्णन लिखे थे ' श्री लंका ' पुस्तक में प्रकाशित किये गये हैं। राहुल जी ने लंका के केवल धार्मिक स्थानों की यात्रा की थी, और देखे हुए स्थलों का वर्णन भी धार्मिक दृष्टि से किया हैं।

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती-शिवानन्द दिग्विजय गोपाल राम गहमरी ने सन् **1916** ई. में अपनी ' लंका ' लिपिबद्ध किया था। उन्होंने भी मूलतः तीर्थों का ही वर्णन ज्यादा अधिक किया है। गोपाल राम गहमरी लंका यात्रा का विवरण सन् **1916** ई.; गंगा प्रसाद ने अपनी ' लंका टापू की सैर' में वहॉ के प्रकृतिक सौन्दर्य को उद्घाटित किया हैं। गया प्रसाद कृत ' लंका टापू का सैर ' लंका पर लिखे गये सभी यात्रा विवरणों में भिक्षु धर्म रक्षित की' लंका यात्रा ' नामक कृति यात्रा-साहित्य की दृष्टि से सर्वाधिक-

महत्वपूर्ण है। इसमें भारत के बौद्ध-तीर्थों, लंका के बौद्ध विहारों तथा बौद्ध-धर्म के विकास एवं ह्रास पर प्रमाणित विवेचन प्रस्तुत किया गया है। लंका के प्रसिद्ध नगरों, सिंहल जाति, भाषा, शिक्षा तथा प्राकृतिक लंका का आकर्षण वर्णन किया है। भिक्षु धर्म रक्षित कृत लंका यात्रा- 1948 ई., राहुल जी ने कई बार लंका की यात्रा की थी। उन्होंने अपने यात्रा विवरण में बौद्ध धर्म का इतिहास तथा वहाँ के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थानों का वर्णन किया ।

2- जापान :- पं. कन्हैया लाल मिश्र ने ' हमारी जापान यात्रा ' नामक अपनी यात्रा कृति में जापान की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों के परिवेश में जापानी जनता की देश-भक्ति एवं राज-भक्ति का सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है, एवं नगरों का वर्णन तथा उन पर हिन्दू सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव को स्पष्ट किया है। मिश्र की कृति में आज का जापान तथा द्वितीय महासमर के बाद के जापान का सुन्दर चित्र प्रस्तुत करता है। एटमबमों से घायल एवं कराहती जनता का ऐसा मर्म स्पर्शी चित्रण अत्यन्त-दुर्लभ है। लेखक ने प्राकृतिक सौन्दर्य वर्णन के साथ वहाँ की समग्र परिस्थितियों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है। बौद्ध-धर्म के विकास एवं पतन की ऐतिहासिक रूप रेखा प्रस्तुत की गयी है। वह सुन्दर यात्रा कृति मानी जाती है। भदन्त आनन्द कौशल्यायन- 'आज का जापान ', रामकृष्ण बजाज ने व्यापारिक एवं आर्थिक दृष्टि कोण से ' जापान की सैर ' का विवरण प्रस्तुत किया है। प्रकारान्तर से जापान की प्राकृतिक सम्पदा तथा वहाँ के प्रसिद्ध नगरों का वर्णन किया है। राहुल जी ने सन् 1935 ई. में जापान देश की यात्रा की थी । इन्होंने तत्कालीन जापान का समग्र चित्र प्रस्तुत किया है। जिसका विवेचन आगे किया जायेगा।

3- यूरोप :- पं. रामनारायण मिश्र ने यूरोप के विभिन्न देशों की केवल शिक्षा समीतियों का वर्णन किया है व मुख्य तौर से किया है। यूरोप यात्रा में छः माह की यात्राओं पर आधारित वर्णन किया गया है। स्वामी सत्य देव परिव्राजक द्वारा लिखी गयी ' अपनी यूरोप यात्रा ' साहित्य की महान निधि है। इन्होंने उसमें यात्रा से अपने मानस पर अंकित प्रभाव को बहुत ही आकर्षक ढंग से अभिव्यक्त किया है। श्री गणेश नारायण ने यूरोप के सैर-सपाटे का मनोरंजक वर्णन किया है। तथा इनकी यात्रा सन् 1932 ई. में की गयी थी। 'यूरोप की सूनी-स्मृतियाँ (1937) में ', डॉ. धीरेन्द्र वर्मा द्वारा यूरोप यात्रा के प्रसिद्ध नगरों एवं स्थानों का विस्तृत वर्णन किया है। ' यूरोप ' के पत्र (1942) में विमला कपूर ने भी यूरोप के विभिन्न देशों के दर्शनीय स्थानों एवं प्रमुख नगरों का विस्तृत एवं मनोरंजन वर्णन किया है। साथ ही मानव और मानवेतर प्रकृति का भी सुन्दर वर्णन किया।

4- रूस :- श्री रामकृष्ण बजाज ने सोवियत जन-जीवन की झाँकी प्रस्तुत की है। विभिन्न क्षेत्रों में रूस की प्रगति का लेखक के मन पर जो प्रभाव अंकित हुआ, उसी का वर्णन अपनी यात्रा प्रस्तक में किया है। ' रूसी युवकों के बीच में ' (1962) ई. में श्री यशपाल जैन ने अपनी रूस यात्रा का विवरण प्रस्तुत--

करते हुए मुख्यतया: वहाँ के दार्शनिक स्थानों एवं भौतिक प्रगति का यथार्थ वर्णन किया। ' रूस में छियालिस दिन ' (सन् 1960) श्री सादिलकर ने ' बदलते रूस में ' (सन् 1958) में एक अनुभवी पत्रकार की दृष्टि से तथ्यात्मक चित्र प्रस्तुत किया है। लेखक ने सोवियत शासन के पिछले चालीस वर्षों के विकास पर भी विवेचनात्मक दृष्टि कोण से विचार किया है।

श्री यशपाल ने अपनी कृति ' लोहे की दीवार के दोनों ओर ' (सन् 1935 ई.) में सोवियत देश तथा पूंजीवादी देशों की सामाजिक जीवन और व्यवस्था का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया है। व्हियल तथा लंदन आदि शहरों का विशेष वर्णन किया है। पं. जवाहर लाल ' रूस की सैर 1929 ' और आँखों देखा रूस 1953 ई. में एक राजनेता की दृष्टि से प्रगतिशील रूस की झाँकी प्रस्तुत की है। राहुल जी ने रूस की कई बार यात्राएं की थी। वे सन् 1944 ई. से सन् 1947 तक 3 वर्ष रूस में भी रहे साम्यवादी रूस की प्रगति का समग्र चित्र राहुल जी ने अपने चार विशाल ग्रंथों में प्रस्तुत किया है।

5- चीन :- श्री ठाकुर गर्जाधर सिंह ने ' चीन में तेरह मास ' नामक अपने यात्रा वृत्तान्त में महायुद्ध का आँखों देखा हाल चीन, जापान का संक्षिप्त इतिहास वहाँ के आचार-विचार, धर्म विश्वास, जाति-पांति एवं ऐतिहासिक स्थानों आदि का यथार्थ वर्णन किया है। डॉ. भागवत उपाध्याय ने अपनी चीन यात्रा का वृत्तान्त ' लालचीन ' तथा ' कलकत्ता से पेकिंग ' नाम से प्रकाशित करवाया है। शुद्ध यात्रा साहित्य की दृष्टि से दोनों कृतियां महत्वपूर्ण हैं। राहुल जी ने अपनी यात्रा के विवरण ' चीन में देखा ' और ' चीन के कम्युन ' नामक पुस्तकों में लिपिबद्ध किये हैं। नव चीन का सर्वांगीण चित्रण लेखक ने अपने ढंग से प्रस्तुत किया।

6- ईरान :- श्री सत्यपाल विद्यालंकार ने ' ईरान ' नामक पुस्तक में वहाँ की सामान्य भौगोलिक और सामाजिक जानकारी प्रस्तुत की है। मौलवी महेश प्रसाद ने अपनी कृति ' ईरान यात्रा ' में मार्ग में पड़ने वाले प्रसिद्ध शहरों एव बन्दरगाहों का सजीव चित्रण किया है। राहुल जी ने अपने ढंग से ईरान की दो बार यात्रा की थी। उन्होंने ईरान की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा खाद्यानों, यातायात के साधन, शासन का अनुचित ढंग का विस्तृत रूप से वर्णन किया है।

7- अफगानिस्तान :- अफगानिस्तान की राहुल जी के अतिरिक्त अन्य लोगों ने भी यात्रा की है। जिनमें से सर्वप्रथम रघुनाथ सिंह एम. जी. की यात्रा पुस्तक ' आवाना ' मिलिती है। उसमें लेखक ने केवल अफगानिस्तान के वर्तमान एवं अतीत के ऐतिहासिक महत्व रखने वाले प्रसिद्ध नगरों एवं स्थानों का प्रमाणिक वर्णन किया है। राहुल जी ने सन् 1937 ई. में अफगानिस्तान की यात्रा की थी। इन्होंने वहाँ के महत्वपूर्ण स्थानों, राजा-महाराजाओं, युद्ध, प्राकृतिक-

सुन्दरता, नदी–तालाबों आदि का सम्पूर्ण वर्णन किया है जो हिन्दी के अन्य यात्रा साहित्य लेखकों ने नहीं किया ।

8– नेपाल :–

––– श्री काशी प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा रचित 'नेपाल की कहानी' यात्रा–वृतान्त से अधिक नेपाल का इतिहास है। लेखक ने नेपाल की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि, प्राकृतिक तथा राष्ट्रीय जन–जीवन की रूपरेखा प्रस्तुत की है । सम्पूर्ण नेपाल की विस्तृत झाँकी चित्रित करने में लेखक आंशिक रूप से सफल हुआ है। दूसरी महत्वपूर्ण पुस्तक 'नेपाल यात्रा' भिक्षु धर्म कीर्ति की उपलब्ध होती है। उसमें नेपाल के इतिहास राजनीति, सभ्यता, समाज, संस्कृति आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है। यह सब नेपाल की सुन्दर सॉस्कृतिक यात्रावृत है। नेपाल पर और भी कई छोटी–छोटी पुस्तकें मिलती हैं । किन्तु हिन्दी भाषा में इस देश पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ राहुल जी का है। जो अभी तक अप्रकाशित है । इन्होंने समाज, जन–जीवन, राजाशाही, नेपाली समाज का बदलता स्वरूप तथा वहाँ के सॉस्कृतिक वृथ्योत्थान का प्रमाणिक विवेचन प्रस्तुत किया है। लेखक का अपने इस ग्रन्थ के विषय में स्वयं ~~राहुल जी~~ का वक्तव्य है कि हिन्दी तो क्या विश्व की किसी भी भाषा में ऐसा सर्वांगीण सम्पूर्ण ग्रन्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यात्रीयों के लिए यात्रा–विश्वकोष है, तथा उसके अलावा 'नेपाल यात्रा 1953' और 'नेपाल' अभी तक अप्रकाशित है।

9– लद्दाख :–

––––– लद्दाख पर राहुल जी की 'मेरी लद्दाख यात्रा' तथा श्री कर्नल सज्जन सिंह 'लद्दाख डायरी' दो यात्रा विवरण मिलते हैं। श्री कर्नल सज्जन सिंह ने हिमालय के दुर्गम प्रवेश, लद्दाख की रोमांचकारी शिकार यात्रा का वर्णन किया है। राहुल जी ने लद्दाख की जनता की धार्मिक इच्छा में जो समानता प्राप्त की है उसके सम्बन्ध में लिखा है कि – "कब्र पूजा यहाँ पर बड़े जोरों पर है। मुसलमान और तन्मई तो करते ही हैं, हिन्दू भी इसमें उनसे कम नहीं हैं। वैशाखी के समय सखी–सखा, पीर की कब्र पर कई हजार हिन्दू स्त्री– पुरूष पहुचते है। कोई लड़के के लिए तो कोई बीमारी से मुक्त होने के लिए पहुंचता है।मुसलमान मुजावर(पंडे) सैकड़ों की तादात में वहाँ रहते हैं।" 1

10– तिब्बत:–

हिन्दी यात्रा–साहित्य में राहुल जी के अतिरिक्त भी कृष्ण वंश सिंह बाघेल की पुस्तक ' तिब्बत में 23 दिन ' मिलती है। इसमें वहाँ के खान–पान, रहन–सहन, आदि का एक मूक दर्शक के समान वर्णन किया है। तिब्बत देश की यात्रा राहुल जी क्रमशः सन् 1929 ई.,1934 ई., 1939 ई. में की है। यह हिन्दी लेखकों में तिब्बत पर अधिक लिखने वालों में सर्वप्रथम माने जाते हैं। इनके यात्रा विवरण डूसेर और काबागूची के यात्रा विवरण से अधिक सम्पूर्ण और प्रमाणिक माने जाते हैं।

------------

1– मेरी लद्दाख यात्रा : राहुल सॉकृत्यायन , पृष्ठ – 18.